

जैसा चित्र, वैसा चरित्र

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

आप देखेंगे कि जब मनुष्य क्रोध करता है, वासना में आता है या लोभ में आता है, मोह में आता है तब भी उसके सामने चित्र आता है। जब वो उनसे उपराम रहता है या उनसे छूटा हुआ रहता है तब भी उसके सामने चित्र आता है। किसी मनोवैज्ञानिक ने कहा है कि मनुष्य के विचार पहले मन में चित्र के रूप में हुआ करते हैं। शब्द की उत्पत्ति बाद में होती है लेकिन पहले-पहले मनुष्य

फिल्म आदि दिखाते हैं तो वह सहज और स्पष्ट रूप से समझते हैं। उसको मुँह बोलती तस्वीर कहा जाता है। आज आप देखेंगे कि लोग ज़्यादा टीवी ही देखते रहते हैं। अगर हम उनको कोई कार्यक्रम में बुलाते हैं तो आते ही नहीं, वहां से उठना ही नहीं चाहते। जैसे और लत है, वैसे टीवी की भी बहुत बड़ी लत है। हमारे डॉक्टर भाई-बहन ड्रग-एडिक्शन की बात करते हैं, आप देखेंगे कि कुछ

बहन भी ऑर्ब को कॉर्ब कहते हैं। हमेशा अपने आप को ऐसा समझो या मन में ऐसा चित्र लाओ अभ्यास के लिए या पुरुषार्थ के लिए कि मैं ज्योतिर्बिन्दु आत्मा हूँ, मेरे आस-पास प्रकाश का प्रभामण्डल है, अतः हम चलते-फिरते, उठते-बैठते यह याद रखें।

जैसा है वैसा ही देखें

मुझे आश्चर्य लगता है कि अभी तक हमें यह याद रहता है कि मेरा नाक है, कान

एक बहुत महत्वपूर्ण बात परमात्मा ने हमें कही है, वो है, जैसा चित्र वैसा चरित्र। यह बहुत बड़ा मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है। जैसे हमारी स्मृति से हमारी वृत्ति और दृष्टि का गहरा सम्बन्ध है, वैसे हमारे चरित्र का सम्बन्ध हमारे चित्र से है। मनोपरिवर्तन और परिवर्तन में चित्र का बहुत महत्व है, क्योंकि मन चित्र को पढ़ता है, अक्षर को नहीं। तो अपने मन में श्रेष्ठ संकल्पों का दृष्यांकन करके ही श्रेष्ठ चरित्र बना सकते हैं।



के सामने चित्र आता है। मिसाल के तौर पर, एक व्यक्ति खाना खाता है कुर्सी पर बैठकर, उसको संकल्प आता है कि एक ऊंची जगह हो जिस पर बैठकर खाना खाया जाये। तो उसको मन में एक चित्र आता है कुछ ऐसा पत्थर जैसा है उसको चार टांगें हों, उसको ऐसा बना दिया जाये कि जिसकी लम्बाई इतनी हो और चौड़ाई इतनी हो, तो कैसा होगा! मेज नाम बाद में पड़ता है। ऐसा कहा गया है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। पहले आवश्यकता महसूस हुई फिर बाद में उसका आविष्कार किया गया। जब वह चीज़ बन गयी तो ज़रूरी है उसको नाम दिया जाये। जब वह चीज़ प्रयोग में आने लगी तो उसको किसी नाम से तो बुलाना पड़ेगा।

चित्र ही पतन और उत्थान का कारण बनता है

बच्चा भी बोलना बाद में सीखता है, भाषा बाद में सिखायी जाती है लेकिन व्यक्तियों के, वस्तुओं के चित्र पहले दिखाना शुरू किया जाता है। चित्र हमारे मन में अंकित हो जाते हैं, अपना प्रभाव छोड़ जाते हैं। हमें यह देखना चाहिए कि क्या हम इस सिद्धान्त का प्रयोग अपने जीवन में मनोपरिवर्तन के लिए पूर्ण रूप से कर रहे हैं? मैं समझता हूँ कि इसका और ज़्यादा इस्तेमाल करने की आवश्यकता है। जैसे लोगों को अच्छी रीति समझाने के लिए हम लोगों को कॉन्फ्रेंस आदि की विडियो दिखाते हैं। हम उनको वाणी से समझाने या बताने जाते हैं तो उतना प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन जब हम उनको विडियो

समय बाद अखबारों में छपेगा कि टीवी का बहुत बड़ा तथा खतरनाक एडिक्शन है। आजकल हम सुनते हैं कि महिलाओं में मोटापा बढ़ता जा रहा है, उनके लिए यह टीवी भी एक बड़ा कारण है। हमारी बहुत सारी नेगेटिव थिंकिंग और बुरे कर्मों के लिए बुनियादी कारण-यह टीवी है। टीवी का भी एक चित्र है, वह चित्र ही पतन का कारण बन रहा है और चित्र ही उत्थान के कारण बनते हैं। यह बहुत बड़ी बात है, बहुत बड़ा मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है। लेकिन लोगों ने इसके प्रति ध्यान नहीं दिया, जितना परमात्मा ने हमारा ध्यान खिंचवाया है। इसका प्रयोग हम कैसे कर सकते हैं, इसे समझने का प्रयास करेंगे।

जैसा संकल्प वैसा ही चित्र

परमात्मा ने एक अव्यक्त वाणी में कहा है कि बच्चे, जैसे सूर्य है, जैसे ही मैंने सूर्य शब्द कहा, वैसे ही आपके मस्तिष्क में सूर्य का चित्र आ गया। जैसे सूर्य है, चन्द्रमा है, उनके आस-पास लाइट है। जब बारिश होकर रुकती है उसके बाद आसमान बहुत साफ होता है, आप चन्द्रमा देखेंगे, उसके चारो ओर लाइट का ऑर्ब होता है, जिसको प्रकाश का प्रभामण्डल कहते हैं। वह बहुत स्पष्ट दिखाई पड़ता है और देखने में वह बहुत अच्छा लगता है। परमात्मा ने कहा था कि बच्चे आप ऐसे समझो जैसे कि सूर्य या चन्द्रमा लाइट की ऑर्ब में हैं, वैसे मैं भी लाइट की ऑर्ब में हूँ। ब्रह्माबाबा ऑर्ब को कॉर्ब कहते हैं, हमारे सिन्धी भाई

हैं, मुँह है, यह मैं हूँ। भक्तिमार्ग में भगवान को भी ऐसा ही समझकर याद करते रहे। कहा गया है कि 'भगवान ने मनुष्य को अपने जैसा ही बनाया है' शरीरधारी होने के कारण मनुष्य, भगवान को भी अपने जैसा शरीरधारी समझते हैं। जिन्होंने भी पूजा-पाठ करना शुरू किया, उन्होंने अपने इष्ट को शरीरधारी ही माना। अभी हमें मालूम पड़ा है कि परमात्मा शरीरधारी नहीं हैं, ज्योतिर्बिन्दु हैं, ज्योतिस्वरूप हैं। ज्योतिस्वरूप के आस-पास जो ऑर्ब है, प्रभामण्डल है, आप उसको याद रखिए। परमात्मा ने यह भी कहा है कि चलते-फिरते उठते-बैठते यह भी याद रहे। क्योंकि स्मृति से स्थिति का विशेष सम्बन्ध है। यह भी दूसरा मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है, जिसको हमारे आध्यात्मिक पुरुषार्थ के लिए परमात्मा ने बताया है। यह बहुत असाधारण सिद्धान्त है। चित्र से चरित्र बनता है, स्मृति से स्थिति होती है, इन दोनों नियमों को एक साथ जोड़कर अभ्यास करें, इसको बाबा कहते हैं योग का प्रयोग। एक होता है योग का प्रयोग दूसरा होता है योग में इसका प्रयोग।

योग में चित्र का भी प्रयोग करना चाहिए अगर आप ऐसा अभ्यास करें कि मैं फरिश्ता हूँ, मैं लाइट हूँ, मैं हड्डी-मांस का शरीर नहीं हूँ, मैं तो प्रकाश का बना हुआ हूँ, मैं लाइट और माइट हूँ, कभी वो-कभी वो इस प्रकार अभ्यास करते रहें। तो यह शिकायत कि हमारी आत्म-अभिमानी स्थिति नहीं रहती, खत्म हो जायेगी।



दिल्ली-जैतपुर। मातेश्वरी जगदम्बा के पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए विधायक नारायण दत्त शर्मा। साथ है ब्र.कु. ऊषा।



दिल्ली-बवाना। क्षेत्रीय ब्रह्मनिष्ठ श्री श्री 1008 श्री विभूषित अमृताअनुभव पीठाधीश्वर जगदाचार्य ब्रह्मऋषि स्वामी गौरीशंकर जी महाराज को कार्यक्रम के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उर्मिला, माउण्ट आबू व ब्र.कु. चन्द्रिका।



भरतपुर-शीकरी(राज.)। मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के पुण्य स्मृति दिवस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए एस.एच.ओ. रामेश्वर दयाल मीणा, प्रधानाचार्य वेदप्रकाश जी, कस्बा इंचार्ज विश्वामित्र जी व ब्र.कु. संतोष।



जयपुर-वैशाली नगर। कुमारियों के लिए आयोजित 'त्रिदिवसीय पर्सनेलिटी डेवलपमेंट कैम्प' के पश्चात् समूह चित्र में कुमारियों के साथ ब्र.कु. बहनें।



ऋषिकेश। 'मनोस्थिति बदलें तो परिस्थिति बदल जायेगी' विषयक कार्यक्रम के पश्चात् स्वामी उमेश योगी जी एवं ऋषिकेश स्कूल ऑफ योग की डायरेक्टर लक्ष्मी एलेन लोपेज़ डी.सूज़ा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. आरती।



बेगुसराय-विहार। 'आनंदमयी योग भट्टी' कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. सूर्य, माउण्ट आबू व वहाँ के सभी ब्रह्माकुमार भाई।